International Journal of Social Science and Humanities
www.humanitiesjournals.com
Online ISSN: 2664-8628, Print ISSN: 2664-861X
Received: 22-01-2023, Accepted: 06-02-2023, Published: 22-02-2023
Volume 5, Issue 1, 2023, Page No. 97-100

उत्तर प्रदेश का दलित आन्दोलन पृथक्करण का आन्दोलन न होकर, सर्वसमावेशन का आन्दोलन रहा है

रंजीत कुमार
शोधार्थी, बाबा साहेब भीमराव अम्बड़ेकर विश्व विद्यालय, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
वर्तमान में भारत देश के आधुनिक लोकतन्त्र में दलित आन्दोलन का उदय बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध से माना जा सकता है। यह शताब्दी दलित राजनीति के लिये प्रभात की किरण लेकर आयी थी। आधुनिक लोकतान्त्रिक भारत के पिता विश्वरत्न बाबासाहेब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर ने दलित आन्दोलन की नीव रखी। विश्वरत्न बाबासाहेब ने उन करोड़ो दबे कुचले लोंगो को जिन्हें समाज से बहिष्कृत कर दिया गया था, समाज में समानता का अधिकार दिलाया और उनके जीवन में खुशी की लहर का संचार किया। यही वह प्रथम दौर है जहाँ से दलित राजनीति का उदय हुआ। विश्वरत्न बाबासाहेब ने जिन करोड़ों दलितों को रास्ते पर चलने का भी अधिकार न था, उन्हें सभी अधिकारों को दिलाया और उनके समस्त बन्धनों को काटकर भारतीय राजनीति का अभिन्न अंग बना दिया। और करोड़ों दलितों को मानवाधिकार दिला दिया। बाबासाहेब के समय दलित राजनीति संगठित अवस्था में थी। विश्वरत्न बाबासाहेब के महापरिनिर्वाण के पश्चात दलित राजनीति ने एक नवीन मोड़ लिया। सम्पूर्ण भारत वर्ष के सभी राज्यों में अनेक पार्टियों को गठन हुआ। जिसमें दलित राजनीति पार्टियाँ भी सम्मिलित थी। जिन दलित राजनीतिक पार्टियों का गठन हुआ उनमें उत्तर प्रदेश में माननीय कांशीराम साहेब ने बहुजन समाज पार्टी का गठन करके दलित राजनति के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसका प्रमुख कारण था माननीय कांशीराम साहेब का विश्वरत्न बाबासाहेब के विचारों, आदेशों एवं लक्ष्यों को ध्यान में रखकर चलना। महाराष्ट्र में रामदास अठावले ने रिपब्लिकन पार्टी, बिहार में रामविलास पासवान ने लोक जनशक्ति पार्टी तथा दक्षिण में एक दो दलित पार्टी आदि अनेक अन्य पार्टियों का गठन तो हुआ परन्तु उनका लक्ष्य विश्वरत्न बाबासाहेब के आदेशो के विपरीत ही दृष्टिगोचर हेाता है। उत्तर प्रदेश की दलित राजनीति में सबसे अधिक पहल मान्यवर कांशीराम साहेब एवं बहन कुमारी मायावती ने की । इन दोनों ने ही विश्वरत्न बाबासाहेब के आदेशों को ध्यान में रखकर कार्य किया। बहुजन दलित समाज के सामाजिक, राजनीतिक आर्थिक, शैक्षिण, धार्मिक आदि विकास को सामने रखते हुए कार्य किया। जिस प्रकार विश्वरत्न बाबासाहेब ने बहुजन दलितों के हितों को ध्यान में रखकर कानून के मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया था, वही काम माननीय बहन कुमारी मायावती ने राज्य सभा में दलित शोषित समाज की सदन के सम्मुख बात न रखने देने के कारण इस्तीफा दे दिया था। वर्तमान में बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय बहन कुमारी मायावती को छोड़कर अन्य सभी दलित पार्टियों के राष्ट्रीय अध्यक्ष कुछ तो कांग्रेस मे मिल गये और कुछ भाजपा में मिल गये । इन नेताओं के भाजपा आदि में चले जाने से दलित राजनीति धरासायी हो गयी है। विश्वरत्न बाबासाहेब ने एक समय कहा था कि हे मेरे दलित वीरों तुम गलती से भी कांग्रेस का चार आने का सदस्य मत बनना परन्तु आज तो कांग्रेस और भाजपा में जाने की होड़ लगी हुई है।

मूल शब्दः दलित आन्दोलन, विश्वरत्न बाबासाहेब के महापरिनिर्वाण, चमचागीरी का परिणाम

वर्तमान भारत की प्रत्येक पार्टी का दलितों की वोटों की तरफ हैं सभी राजनीतिक पार्टियों बाबासाहेब की जयन्ती पर मगरमच्छ के आँसु रोती है। ये राजनीतिक पार्टियों दलितों का वोट जिस भी तरिके से मिलें उन सभी तारिकों से मिले उन सभी तारिकों को अपनाती है फिर चाहे वह दलितों नेता ही क्यों न हो। आज दलित नेताओं के भाजपा आदि में चले जाने से दलित राजनीति को जो चोट पहुँची हैं वह असहनीय हैं। वर्तमान की दलित राजनीति को यदि मैं हाँशिये पर पहुँची हुई राजनीति भी कहूँ तो अतिश्योक्ति नही होगी। वर्तमान दलित राजनीति अपने जनक विश्वरत्न बोधिसत्व डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के आदर्शों लक्ष्यों एवं मूल्यों से पूरी तरह से विचलित हो गई है। आज उन्ही दलितों मे से बाहर निकले हुए दलित नेता जिनके अधिकारों एवं समानता के लिए बाबासाहेब ने अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया, विश्वरत्न बाबासाहेब की बंचना कर रहे है। आज दलित नेता अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए भाजपा की चाटुकारिता में लगे हुए है। हाल ही के गुजरात के चुनाव में दलित नेता इस हद तक गिर गये कि चुनाव से पहले तो यह अपने को विश्वरत्न बाबासाहेब के आदर्शों एवं लक्ष्यों का अनुगमनकर्ता एवं दलितों का हितैशी कह रहे थे,परन्तु जीत के बाद में वे ही दलित नेता कांग्रेस आदि अन्य पार्टियों से मिलकर विश्वरत्न बाबासाहेब के अम्बेडकरवाद की निन्दा करते है। एक बात उन दलित नेताओं को जेहन में उतार लेनी चाहिए कि निन्दा मार्क्स के अफीमवादी सिद्वान्त की हो सकती है अम्बेडकरवादी वैज्ञानिक सिद्वान्त की नही। ये दलित नेता आरक्षित सींट से जीतकर विश्वरत्न बाबासाहेब की निन्दा करें ये उनका अशोभनीय कृत्य है और ये दोहरे मापदण्ड दलित राजनीति को दिन प्रतिदिन गिरा रहे है। यहां तक कि दलित नेता व्यक्तिगत स्वार्थो की पूर्ति के लिए कांग्रेस एवं भाजपा आदि के पिछलग्गू बने हैं।

उत्तर प्रदेश की कुल आबादी का चौथाई भाग दलितों का है। इतनी बड़ी आबादी होने के बावजूद भी दलित राजनीति शून्य से भी कम है। इतनी बड़ी आबादी की तो शासन में महत्वपूर्ण भूमिका होनी चाहिए परन्तु परिणाम इसके बिलकुल विपरीत है। केवल एक पार्टी ही ऐसी दलित पार्टी जिसने कभी किसी पार्टी की चाटुकारिता नही की और वह है–बहुजन समाज पार्टी। दलितो की अन्य जो पाटियाँ है वे कांग्रेस एवं भाजपा की चाटूकारिता में तन मन से संलग्न है। बहुजन समाज पार्टी के निर्माता मान्यवर कांशीराम साहेब ने बहुजन दलितों को नारा दिया कि–बाहर निकलो बन्द मकानो से जंग लड़ी बेईमानों से। मान्यवर कांशीराम साहेब ने ऐसे दलित नेताओं को चमचा की संज्ञा दी है। माननीय कांशीराम साहेब ने अपनी पुस्तक चमचा युग में चमचों के भी छः प्रकार बताये है,जो इस प्रकार है–

1. **पार्टीवार चमचे**
   ये अपने आपको दलिय अनुशासन में जकड़ा होने का हवाला देकर समाज विरोधी कार्य करते रहते हैं।

2. **जाति या समुदायवार चमचे**
   इस प्रकार के चमचे वे है जिन्होने संघर्ष करके उज्जवल युग में प्रवेश तो किया परन्तु गांधी और कांग्रेस ने उन्हें अनिच्छुक चमचा बना दिया।

3. **विदेशी चमचे**
   विदेशो में रहने वाले अछूत जिन्हे लगता है कि भारत में चमचों की कमी पड़ रही है तो ये चमचे भारत में आकर शासक जाति की चमचागीरी चालू करते हैं।

4. **ज्ञानी या अम्बेडकरवादी चमचे**
   इस प्रकार के ये लोग है जो बड़ी बड़ी बाते करते है और विश्वसन बाबासाहेब को कोड़ भी करते है परन्तु उनका आचरण सर्वदा इसके विपरीत ही होता हैं।

5. **चमचों के चम्मच**
   ये राजनीतिक चमचे अपनी जाति या समुदाय में पैठ बनाने के लिए अपनी चम्मच बनाते है जो शासक जातियों की पूरी सेवा पाने के लिए तत्पर रहते है। शिक्षित नौकरी पेशा वाले लोग अपने निजी स्वार्थ के लिए इन चमचों की भी चमचागीरी करते हैं।

6. **अवोध या अज्ञानी चमचे**
   इस प्रकार के वे चमचे है जो अपने शोषकों को ही अपना उ़द्धारक समझने की भूल करते हैं।

वर्तमान में भारत की राजनीति में जितने भी दलित नेता है सुश्री बहन कुमारी मायावती को छोड़कर सभी कांग्रेस और बीजेपी की चमचागीरी करने में ही अपना हित साधते है। भविष्य में इस चमचागीरी का परिणाम सम्पूर्ण बहुजन दलित समाज के लिए अनन्त रूपों से घातक होगा यह बात पूर्णतः निश्चित है। दलित नेता जिग्नेश मेवाणी अपने विचार विश्वल्न बाबासाहेब से भिन्न बताता है। इसका क्या पर्याय है ? इसका पर्याय केवल इतना ही समझा जा सकता है कि कांग्रेस उससे ऐसा कहने के लिए कहती है। कांग्रेंस आज भी लगातार विश्वरत्न बाबासाहेब का विभिन्न हथकंडे अपनाकर अपमान कराती रहती है। परन्तु ये बिल्कुल साफ है कि एक बार विश्वरत्न बाबासाहेब के सामने गाँधी हासिये पर पहुँच गए। यदि कोई अन्य भी सामने खड़ा होगा तो उसका भी वही होगा जो गाँधी का हुआ था। अम्बेड़करवाद का आकर्षण दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। विश्वरत्न बाबासाहेब के भक्त नही है अपितु अनुयायी है। चूंकि भक्ति की दीवार श्रद्वा पर टिकी होती है और अनुयायी की दीवार वैज्ञानिकता और तर्क पर। एक चुनाव में विश्वरत्न बाबासाहेब के सामने गांधी एण्ड कम्पनी जगजीवन राम को खड़ा किया था जिसमें बाबासाहेब चुनाव हार गये थे, तब विश्वरत्न बाबासाहेब ने कहा था कि यह आशंका मुझे पूर्व में ही थी कि गांधी एण्ड कम्पनी मेरे सामने मुझे हराने के लिए किसी अछूत को ही खड़ा करेगी। इसीलिए मै पृथक् निर्वाचक मण्डल की मांग कर रहा था। चूंकि भविष्य में भी गांधी एण्ड कम्पनी ऐसा ही करेगी और पुनः दलितों को मोहरा के रूप में प्रयोग करती रहेगी। विश्वरत्न बाबासाहेब इस पर बहुत दुखी हुए थे। बाबासाहेब का यह भी मानना था कि वर्तमान मतदान प्रणाली दलित बहुजन को अपना सच्चा हितैशी जो उनके सामाजिक उत्थान के लिए पूर्ण समर्पित होगा, के चुनाव मे काम नहीं आयेगी। हिन्दू जिन आरक्षित सीटो पर दलित बहुजन को खड़ा करेंगे वे दलितो के नही वरन् हिन्दुओ के चमचे होगे। विश्वरत्न बाबासाहेब ने जब भी जो कुछ कहा वह आज वर्तमान में पूर्णतः दृष्टिगोचर हो रहा है। यदि सभी बहुजन दलित और बहुजन दलित नेता एकजुट नही हुए तो वह दिन दूर नही है जब उसे वही पहुंच जाना है जहां से वह विश्वरत्न बाबासाहेब ने उन्हे था चूंकि विघटन सदैव ही विनाश का कारण होता हैं।

बहुजन समाज में जन्में सन्तों गुरूओं तथा महापुरूषों को बी0एस0पी0 अपना आदर्श मानती है। इनमें तथागत बुद्ध,बोधिसत्व बाबा साहब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर,महामना ज्योतिबा राव फूले,ई0वी0 रामास्वामीनायक पेरियार, छत्रपति साहू जी महाराज,सन्त शिरोमणि रविदास जी महाराज,सन्त गाडगे, सन्त कबीर,नारायण गुरू प्रमुख है। उपरोक्त महामानवों की विचाराधारा एक समतामूलक समाज व्यवस्था को स्थापित करने की रही है। बहुजन समाज पार्टी भी देश में मनुवादी व्यवस्था के तहत जो गैर बराबरी वाली सामाजिक व्यवस्था बनी है,उसे बदलकर समतामूलक समाज व्यवस्था बनाना चाहती है। बी0एस0पी0 की राष्ट्रीय अध्यक्ष कु0 मायावती ने अपनी पुस्तक ''मेरे संघर्ष मय जीवन एवं बहुजन मूवमेण्ट का सफरनामा'' के भाग–2 पेज नं0–852–53 पर पार्टी की विचाराधारा को स्पष्ट करते हुए आगे लिखा है कि ''इस व्यवस्था परिवर्तन में यदि सवर्ण समाज से जो लोग अपनी मनुवादी मानसिकता को छोड़कर इसमें सहयोग देते है तो ऐसे लोगो का पार्टी में स्वागत किया जायेगा अर्थात उन्हे बहुजन समाज की तरह हर मामले में उनकी लगन व कार्यक्षमता एवं विश्वसनीयता को ध्यान में रखकर पूरा आदर सम्मान भी दिया जायेगा। लेकिन बी0एस0पी0 की विचाराधारा के बारे में एक सोची समझी राजनीतिक साजिश के तहत मनुवादी पार्टियों के लोग अक्सर यह प्रचार करते है कि यह पार्टी जातिवादी है। जबकि इसमें रती भर भी सच्चाई नही है वैसे बहुजन समाज पार्टी को बनाते समय उनको झकझोरने के लिए हम जाति की बाते जरूर करते है। परन्तु इसका मतलब यह नही कि इस पार्टी को बनाने वाले लोग जातिवादी है। सच तो यह है कि इस समाज के लोग ही जातिवाद के शिकार रहे हैं और जो जातिवाद के शिकार हैं वे जातिवादी कैसे हो सकते हैं। हम तो अन्ततःजाति रहित समाज चाहते है। जातिवादी तो वे लगे है जिन्हे जाति के आधार पर फायदा पहुँचा है। जिन्हे जाति के नाम पर मान और सम्मान मिला है,उन्होने ही इसे टिकाये रखने की हर कोशिश की है तथा उन्होने अपनी–अपनी पार्टियो बनायी है जिसके माध्यम से इस जातिवाद को नये जमाने के हिसाब से टिकाये रखना चाहते है। जाति की बात तो हम इसलिए करते है क्योकि बहुजन समाज के लोगो को जातिवाद से नुकसान पहुँचा है, घोर तकलीफ व अपमान मिला है वे तो जातिवाद को समाप्त करना चाहते है। जातिवाद जैसी बीमारी को ध्यान में रखकर ही हमें इस बीमारी का इलाज करना है, जिसका मुख्य कारण यहाँ व्याप्त ''मनुवाद'' है और इसी के इलाज के लिए यह पार्टी बनायी गयी है। उपरोक्त बातों से स्पष्ट होता है कि बहुजन समाज पार्टी किसी जाति व धर्म के खिलाफ नहीं है बल्कि ''जातिवाद''के खिलाफ है।

मान्यवर कांशीराम ने बहुजन समाज कि विचाराधारा को गति देने के लिए 6 दिसम्बर 1978 को दिल्ली में देश भर से आये शिक्षित कर्मचारियों को इकट्ठा कर एक सम्मेलन में 'बामसेफ' नामक संगठन की विधिवत घोषणा की। तत्पश्चात 6 दिसम्बर 1981 को मान्यवर कांशीराम ने दलित शोषित समाज संघर्ष समिति अर्थात डी0एस0–4 का गठन किया। इस संगठन का मुख्य उद्देश्य दलित और शोषित समाज के अधिकारों के लिए संघर्ष करना था। तत्पश्चात मान्यवर कांशीराम ने बाबा साहब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर जी के जन्म दिन 14 अप्रैल 1984 को अधिकारिक रूप से बहुजन समाज पार्टी गठन किया। दिनांक 22, 23 एवं 24 जून

1984 को दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किला मैदान में पार्टी का पहला तीन दिवसीय अधिवेशन सम्पन्न हुआ।

भारतीय समाज विश्व का एक विरल व विचित्र समाज है। जहाँ समाज के अनुरूप ही लोगों का चरित्र विकसित हुआ है। इस अप्रिय सत्य से अवगत होने के कारण ही डॉ0 भीमराव अम्बेडकर ने ''खूनी क्रांतियों ''द्वारा कोई लक्ष्य प्राप्त नहीं किया,बल्कि उनका मानना था कि गुलाम को गुलामी का एहसास करा दो वह गुलामी की जंजीर तोड़ देगा। इस क्षेत्र में मा0 कांशीराम,वामनमेश्राम व विभिन्न बहुजन संगठनो और बुद्विजीवियो द्वारा प्रशंसनीय प्रयास किया जा रहा है। भारतीय समाज में समानता लाने हेतु डॉ0 भीमराव अम्बेडकर जी द्वारा बहुजन समाज के लोगो को उनके सामाजिक और राजनीतिक अधिकार दिलायें इस संकल्प को आगे बढ़ाने का कार्य किया।

जहाँ तक देश में बहुजन समाज के आर्थिक पहलू का सवाल है। यह सवाल भी सीधा इस देश की मनुवादी समाज व्यवस्था से जुड़ा है। यहाँ मनुवादी–समाज व्यवस्था के आधार पर जो गैर बराबरी भी कायम है। इसलिए बहुजन समाज पार्टी आर्थिक गैर–बराबरी को दूर करना जरूरी समझती है और हमारा यह पूरा विश्वास है कि जिस दिन इस देश में सामाजिक गैर बराबरी दूर हो जायेगी, उस दिन आर्थिक गैर बराबरी काफी हद तक अपने आप ही समाप्त हो जायेगी। इसके लिए हमें ज्यादा संघर्ष नही करना पड़ेगा।

वर्तमान में बहुजन समाज की आर्थिक स्थिति बहुत ही दयनीय है। हमारे समाज के लोग जिस खेती में मेहनत करके फसल पैदा करते है। उन जमीनों पर उनका मालिकाना हक नही होता है। तथा वे मनुवादी जमीदारो के अन्याय और शोषण के शिकार होते रहते है। इस स्थिति से तंग आकर वे अपने गाँवों को छोड़कर रोजगार और सम्मानपूर्वक जिन्दगी की तलाश में बड़े–बड़े शहरों में आ जाते है। फिर उन्हे गन्दी गन्दी बस्ती में अर्थात पुलों के नीचे नालों तथा रेल की पटरी के किनारे और अन्य गन्दे स्थानो पर जानवरों से भी ज्यादा बुरी जिन्दगी जीने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर ने जाति के आधार पर अनुसूचित जाति एवं जनजाति के लोगो को उनके सामाजिक और राजनीतिक अधिकार दिलाये। जाति का सहारा लेकर ही इन्होने सन 1931–32 में अंग्रेजो के शासनकाल में हुए ''राउण्ड टेबल कान्फ्रेन्स'' में इन वर्गो के लिए पृथक निर्वाचन की व्यवस्था करवायी लेकिन इस मुद्दे पर गाँधी जी के आमरण अनशन के कारण इन वर्गो को ''पृथक निर्वाचन''का अधिकार खोना पड़ा। जिस तरह बाबा साहब अम्बेडकर ने पृथक निर्वाचन के लिए संघर्ष किया, ठीक उसी प्रकार संघर्ष आप क्यों नही करते ।

बाबा साहब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर जी ने कहा था कि–राजनीतिक सत्ता वह मास्टर चाबी है जिससे आप अपनी तरक्की और सम्मान के सभी दरवाजे खोल करते है। महाराष्ट्र मे,बहुजन समाज के लोग लगभग 25 वर्ष से महाराष्ट्र विश्वविद्यालय का नाम बाबा साहब अम्बेडकर विश्वविद्यालय रखना चाहते थे। लेकिन वे इन कार्य में सफल नही हो सके। वही उत्तर प्रदेश में सत्ता की मास्टर प्राप्त करने के बाद एक नही अनेक विश्वविद्यालयों का नामकरण किया गया। जिसमें प्रमुख रूप से छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर डॉ भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय आगरा, महात्मा ज्योतिबा फुले विश्वविद्यालय, लखनऊ में बाबा साहेब भीमराव अम्बेड़कर विश्वविद्यालय की स्थापना (केन्द्रीय वि0वि0) बरेली, लखनऊ में बाबा साहेब भीमराव अम्बेड़कर विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्व विद्यालय) गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय नोयड़ा आदि प्रमुख है। इससे साफ जाहिर होता है कि आप ''जाति'' का अपने हित में इस्तेमाल करके राजनीतिक सत्ता की मास्टर चाबी को अपने हाथ में ले सकत है। और अपने समाज को आत्मसम्मान तथा तरक्की की जिन्दगी मुहैया करा सकते है।

बहुजन समाज पार्टी ने बहुत कम समय में बहुजन समाज के जिन्दगी में कितना सुखद बदलाव लाया है। उन्हे न केवल हमने नारकीय जीवन से छुटकारा दिलाया है बल्कि उन्हे आत्मसम्मान व स्वाभिमान के साथ जीवन गुजारने का अवसर भी मुहैया कराया है। इनके साथ–साथ ऊँची जातियों मे गरीब तबका किसान मजदूर व व्यापारी तथा अन्य व्यवसायो में लगे लोगो ने काफी राहत की साँस ली है। बहुजन समाज पार्टी के सत्ता में आने से दलितों में सांस्कृतिक स्तर पर भारी बदलाव आने लगा है। लोगो ने हिन्दू देवी–देवताओं की मूर्तियों को घरों से निकालकर नदी तालाब में डुबोना शुरू कर दिया है और उनकी जगह फूले,पेरियार, अम्बेडकर,गौतम बुद्ध,कांशीराम इत्यादि की तस्वीर लगाने लगे है।

ऐसे में बहुजन समाज पार्टी जहाँ चुनाव में एक राजनीतिक पार्टी नजर आती है। वही सामाजिक स्तर पर सामाजिक विद्रोह का दर्पण भी दिखाती है। बहुजन समाज पार्टी हमेशा उनके जीवन स्तर सुधारने तथा उनके सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक अधिकारों के साथ–साथ सांस्कृतिक अधिकारो को दिलाने का प्रयास किया है।

भारत में तथागत बुद्ध धारा नवजागरण की प्रथम बेला थी। आगे चलकर बुद्ध शिक्षाओं ने मानव चिन्तन को नई दिशा प्रदान की। समतामूलक समाज के निर्माण में महती योगदान दिया है। कालान्तर में संत कबीर,सन्त रविदास,सन्त तुकाराम तथा मध्यकालीन सूफी सन्तो ने अमरगीत गा–गाकर पूरे भारतीय समाज में स्पन्दन पैदा किया है। जिससे लोगो के दिलों में प्रेम का झरना बहा है। इन महामानवों की चर्चाओं ने जीवन की प्राथमिकता ही बदल डाली। ज्ञान की इस धारा का वैश्विक प्रभाव हुआ।

बहुजन समाज पार्टी के संस्थापक कांशीराम के जीवन को विस्मरणीय बनाने के लिए मुख्यमंत्री मायावती की अध्यक्षता में 4 अगस्त 2007 को हुई मंत्री परिषद की बैठक में कई महत्वपूर्ण फैसले लिए गये। बैठक में प्रदेश के चुनिन्दे विश्वविद्यालयों में कांशीराम के विचारों के अध्ययन एवं शोधकार्य के लिए पीठ स्थापित की जायेगी और लेखन के क्षेत्र में 2.50 लाख रूप्ये का ''काशीराम स्वाभिमान पुरस्कार दिया जायेगा । साथ ही यह भी निर्णय लिया गया कि माननीय कांशीराम की स्मृति में उच्च शिक्षा विभाग द्वारा उनके विचारों के अध्ययन एवं शोघ कार्यो के लिए चयनित विश्वविद्यालयों में संस्कृति,भाषा व सूचना विभाग द्वारा बसपा संस्थापक के कृतियों पर विभिन्न प्रकार के साहित्यो का प्रकाशन होगा। इसके तहत 2.5 लाख रूपये की नकद राशी, स्मृति चिन्ह एवं शाल कुछ खास विभूतियों को एवार्ड के रूप में दी जायेगी। यह सभी पुरस्कार कांशीराम के जन्म दिन पर इन क्षेत्रों मे विशिष्ट योगदान करने वाले लोगो को प्रदान किया जायेगा।

निष्कर्ष रूप में कह सकते है कि व्यक्तिगत स्वार्थो की पूर्ति के लिए जिस गति से दलित नेता कांग्रेस और बीजेपी में जा रहे है क्या इससे वे कभी देशक के शासक बन पायेगे? क्या वे कभी देश की बागडोर अपने हाथों में ले पायेगे ? यह एक चिन्ता का विषय है कि देश के समस्त दलित नेताओं के लिए देश के शासन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने है परन्तु ऐसा नही हो रहा है। देश की राजनीति में बहुजन समाज के नेताओं का कोई महत्वपूर्ण स्थान नही है और न ही उनका कोई कार्य दलित हित में हुआ है। 1952 में विश्वरत्न बाबासाहेब ने कहा था कि किसी भी राजनीतिक पार्टी का काम केवल चुनाव जीतना मात्र नही है, बल्कि यह लोगो को शिक्षित करने एवं संगठित करने का होता है। परन्तु दलित नेताओं ने विश्वरत्न बाबासाहेब के आदर्श को विस्मृत कर दिया है। सभी दलित नेताओ ने यदि इस वर्तमान परिस्थिति की भी नही पहचाना तो दलित राजनीति का पतन तो हो ही गया है, उसका पूर्ण नाश भी कुछ ही समय बाद देख

लेंगे। इसलिए समस्त बहुजन दलित एक सूत्र होकर देश की राजनीति में भाग लें। चूंकि दलित राजनीति पृथक्करण की राजनीति नही है। सभी दलित नेताओं के पृथक–पृथक हो जाने से वे कभी भी देश में स्वसाम्राज्य स्थापित नही कर सके और न ही किसी अन्य राजनीति पार्टी से जुडकर। विश्वरत्न बाबासाहेब ने समस्त बिखरे हुए बहुजन दलित समाज को एक होने का मार्ग बताया था। विश्वरत्न बाबासाहेब ने जो तीन रत्न–शिक्षित बनो, संगठित रहो,और संघर्ष करो, उन्हे पुनः दोहराने की जरूरत है और सभी दलित नेताओ को आज संगठित होने की बहुत जरूरत है। चूंकि दलित राजनीति पृथक्करण की राजनीति ने होकर,सर्व समावेश की राजनीति है।

सन्दर्भ सूची

1. सतनाम सिंह बहुजन नायक कांशीराम, प्रकाशक वर्ष–2016,प्रकाशक–सम्यक प्रकाशन 32/3 पश्चिम पुरी,नई दिल्ली–1100063 पृ0–111
2. डॉ0 पुरूषोत्तम नागर, आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
3. कुमारी मायावाती, मेरे संघर्षमय जीवन एवं बहुजन मूवमेंट का सफरनामा भाग–2,प्रकाशन वर्ष–15 जनवरी 2006,प्रकाशकः बहुजन समाज पार्टी केन्द्रीय कार्यालय, 12 गुरूद्वारा रकाबगंज रोड़ नई दिल्ली–110001
4. एच0एल0 दुसाध, सामाजिक परिवर्तन और बी0एस0पी0 वर्ष–2005, प्रकाशक–सम्यक प्रकाशन,32/3 क्लब रोड पश्चिमपुरी, नई दिल्ली।
5. ए0आर0 अकेला, कांशीराम के साक्षात्कार, प्रकाशवर्ष–चतुर्थ संस्करण–2007, प्रकाशक–मानक पब्लिकेशन्स प्रो0 लि0 बी–7 सरस्वती कॉमप्लेक्स, सुभाष चौक लक्ष्मीनगर दिल्ली–110092
6. आर0 के0सिंह, कांशीराम और बी0 एस0 पी0 (दलित आन्दोलन का वैचारिक आधार), प्रकाशन वर्ष–1994 प्रकाशक–कुशवाहा बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स इलाहाबाद
7. मान्यवर कांशीराम, चमचा युग,प्रकाशन वर्ष–द्वितीय संस्करण–2010, प्रकाशः सम्यक प्रकाशन 32/3 पश्चिमपुरी, नई दिल्ली–63।
8. विचार और संस्कृति का मासिंक समयांतर,ग्रन्थ शिल्पी (इडिया) प्रा0 लिमिटेड, बी–7, सरस्वती कामप्लेक्स, सुभाष चौक लक्ष्मीनगर दिल्ली–110092
9. राज किशोर, दायित्व राजनीति की समस्याएँ, प्रकाशन वर्ष प्रथम संस्करणः 2006, द्वितीय संस्करण : 2008, प्रकाशन वाणी प्रकाशन, 21–ए दरियागंज नयी दिल्ली–110002
10. सुश्री मायावती जी मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश में बी0एस0पी0 सरकार द्वारा देश में अनुसूचित जाति/जनजाति एवं अन्य पिछड़े वर्गो में जन्में महान सन्तों,गुरूओं व महापुरूषों के सम्मान में निहित महत्वपूर्ण स्थलों व गार्डेन/पार्क आदि का संक्षिप्त परिचय, प्रकाशन वर्ष–2011, प्रकाशकः सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग उत्तर प्रदेश।
11. नानक चन्द्र रत्तू, डॉ0 बी0आर0 अम्बेडकर संस्मरण और स्मृतियाँ प्रकाशन वर्ष–प्रथम संस्करण (हिन्दी) 2002, प्रकाशकः सम्यक प्रकाशन, 32/3 क्लब रोड, पश्चिमपुरी चौक,नई दिल्ली–